पौलुस के धर्मविज्ञान का केन्द्र

अध्याय 4

पौलुस और कुरिन्थियों

Manuscript

thirdmill
Biblical Education. For the World. For Free.

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2021के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इनकोरपोरेशन, 316, लाइव ओक्स बुलेवार्ड, कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 की लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संक्षिप्त उद्धरणों के अतिरिक्त किसी भी रूप में या किसी भी तरह के लाभ के लिए पुनः प्रकशित नहीं किया जा सकता।

पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की हिन्दी की पवित्र बाइबल से लिए गए हैं। सर्वाधिकार © The Bible Society of India

थर्ड मिलेनियम के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम एक लाभनिरपेक्ष सुसमाचारिक मसीही सेवकाई है जो पूरे संसार के लिए मुफ्त में बाइबल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

संसार के लिए मुफ़्त में बाइबल आधारित शिक्षा।

हमारा लक्ष्य संसार भर के हज़ारों पासवानों और मसीही अगुवों को मुफ़्त में मसीही शिक्षा प्रदान करना है जिन्हें सेवकाई के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। हम इस लक्ष्य को अंग्रेजी, अरबी, मनडारिन, रूसी, और स्पैनिश भाषाओं में अद्वितीय मल्टीमीडिया सेमिनारी पाठ्यक्रम की रचना करने और उन्हें विश्व भर में वितरित करने के द्वारा पूरा कर रहे हैं। हमारे पाठयक्रम का अनुवाद सहभागी सेवकाइयों के द्वारा दर्जन भर से अधिक अन्य भाषाओं में भी किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में ग्राफिक वीडियोस, लिखित निर्देश, और इंटरनेट संसाधन पाए जाते हैं। इसकी रचना ऐसे की गई है कि इसका प्रयोग ऑनलाइन और सामुदायिक अध्ययन दोनों संदर्भों में स्कूलों, समूहों, और व्यक्तिगत रूपों में किया जा सकता है।

वर्षों के प्रयासों से हमने अच्छी विषय-वस्तु और गुणवत्ता से परिपूर्ण पुरस्कार-प्राप्त मल्टीमीडिया अध्ययनों की रचना करने की बहुत ही किफ़ायती विधि को विकसित किया है। हमारे लेखक और संपादक धर्मवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षक हैं, हमारे अनुवादक धर्मवैज्ञानिक रूप से दक्ष हैं और लक्ष्य-भाषाओं के मातृभाषी हैं, और हमारे अध्यायों में संसार भर के सैकड़ों सम्मानित सेमिनारी प्रोफ़ेसरों और पासवानों के गहन विचार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हमारे ग्राफिक डिजाइनर, चित्रकार, और प्रोडयूसर्स अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करने के द्वारा उत्पादन के उच्चतम स्तरों का पालन करते हैं।

अपने वितरण के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए थर्ड मिलेनियम ने कलीसियाओं, सेमिनारियों, बाइबल स्कूलों, मिशनरियों, मसीही प्रसारकों, सेटलाइट टेलीविजन प्रदाताओं, और अन्य संगठनों के साथ रणनीतिक सहभागिताएँ स्थापित की हैं। इन संबंधों के फलस्वरूप स्थानीय अगुवों, पासवानों, और सेमिनारी विद्यार्थियों तक अनेक विडियो अध्ययनों को पहुँचाया जा चुका है। हमारी वेबसाइट्स भी वितरण के माध्यम के रूप में कार्य करती हैं और हमारे अध्यायों के लिए अतिरिक्त सामग्रियों को भी प्रदान करती हैं, जिसमें ऐसे निर्देश भी शामिल हैं कि अपने शिक्षण समुदाय को कैसे आरंभ किया जाए।

थर्ड मिलेनियम a 501(c)(3) कारपोरेशन के रूप में IRS के द्वारा मान्यता प्राप्त है। हम आर्थिक रूप से कलीसियाओं, संस्थानों, व्यापारों और लोगों के उदार, टैक्स-डीडक्टीबल योगदानों पर आधारित हैं। हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए, और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार इसमें सहभागी हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org को देखें।

विषय-वस्तु

परिचय......1
पृष्ठभूमि......1
तीसरी मिशनरी यात्रा......2
कुरिन्थ में समस्याएँ......3
टूटे हुए संबंध......3
लैंगिक दुराचरण......4
आराधना में दुर्व्यवहार......5
पौलुस के प्रेरित होने के अधिकार की अस्वीकृति......7
संरचना और विषय सूची......8
1कुरिन्थियों......8
अभिवादन......8
आभार-प्रदर्शन......8
समाप्ति......8
मुख्य भाग......8
2कुरिन्थियों......11
अभिवादन......12
परिचय......12
समाप्ति......12
मुख्य भाग......12
धर्मविज्ञानी दृष्टिकोण......14
विश्वास......15
मसीह, प्रभु के रूप में......16
मसीह, उद्धारकर्ता के रूप में......16
आशा......18
प्रेम......19
उपसंहार......21

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

पौलुस के धर्मविज्ञान का केन्द्र

अध्याय चार

पौलुस और कुरिन्थियों

परिचय

हम में से बहुत से लोग ऐसोप नामक प्राचीन यूनान से जुड़ी कथाओं से परिचित हैं। उन में से एक कहानी “कछुआ और खरगोश,” में एक खरगोश को घमण्ड था कि वह संसार का सबसे तेज दौड़ने वाला प्राणी था। अत:, खरगोश के घमण्ड से परेशान होकर कछुए ने उसे दौड़ की चुनौती दी। अब, खरगोश आसानी से जीत सकता था, परन्तु वह अपनी जीत के बारे में इतना अधिक निश्चित था और अपनी क्षमताओं पर उसे इतना अधिक घमण्ड था कि वह दौड़ के बीच में एक झपकी लेता है। और जब खरगोश सो रहा था तो कछुए ने सीमा रेखा को उससे पहले पार कर लिया।

कई प्रकार से पहली सदी में कुरिन्थ नगर में रहने वाले बहुत से मसीही ऐसोप की कहानी के खरगोश के समान थे। जिस प्रकार दौड़ के समाप्त होने से पूर्व ही खरगोश ने अपने आप को विजेता मान लिया था, उसी प्रकार कुरिन्थ के बहुत से विश्वासी अपने मसीही जीवन की दौड़ के पूरा होने से पूर्व ही स्वयं को विजेता मानने लगे थे। अपनी सांसारिक समृद्धि और अपने विशेष आत्मिक वरदानों को देखकर वे यह मानने लगे थे कि प्रभु ने उनको शेष सब लोगों से श्रेष्ठ बनाया था। वे सोचते थे कि परमेश्वर ने उन्हें उन अन्य मसीहियों से कहीं अधिक आशीष दी है जिनके पास सांसारिक समृद्धि और विशेष आत्मिक वरदानों की कमी थी।

यह हमारी श्रृंखला, *पौलुस के धर्मविज्ञान का केन्द्र,* का चौथा अध्याय है, और हमने इस अध्याय का शीर्षक दिया है, “पौलुस और कुरिन्थी।” इस अध्याय में हम देखेंगे कि पौलुस ने इन घमण्डी मसीहियों को अपनी पत्रियों में कैसे संबोधित किया जिन्हें आज 1 और 2 कुरिन्थियों के नाम से जाना जाता है। यद्यपि पौलुस को बहुत सी विशिष्ट समस्याओं को संबोधित करना था, परन्तु इन पत्रियों में उसने अपना अधिकाँश ध्यान उनकी बहुत सी समस्याओं के मुख्य स्रोत पर लगाया, अर्थात् यह भ्रांत धारणा कि उन में से कई लोगों ने मसीही जीवन की सीमा रेखा को पहले ही पार कर लिया था, जबकि वास्तविकता में दौड़ अभी जारी थी।

पौलुस और कुरिन्थियों का हमारा अध्ययन तीन भागों में विभाजित होगा। पहला, हम कुरिन्थियों को लिखी पौलुस की पत्रियों की पृष्ठभूमि को देखेंगे; दूसरा, हम 1 और 2 कुरिन्थियों की संरचना और विषय सूची को देखेंगे; और तीसरा, हम देखेंगे पौलुस की पत्रियाँ कैसे उसके केन्द्रिय धर्मविज्ञानी दृष्टिकोणों में से एक को प्रकट करती हैं, अर्थात् अन्त के दिनों के बारे में उसका सिद्धान्त, या उसकी युगान्तविद्या। आइए पहले हम कुरिन्थियों को लिखी पौलुस की पत्रियों की पृष्ठभूमि को देखते हैं।

पृष्ठभूमि

जैसे हमने इस श्रृंखला के दौरान बल दिया है, प्रेरित पौलुस ने विभिन्न कलीसियाओं में उत्पन्न हुए विशेष मुद्दों को संबोधित करने के लिए अपनी पत्रियों को लिखा था। अत:, जब हम 1 और 2 कुरिन्थियों को देखते हैं, तो हमें कुछ मूलभूत प्रश्नों को पूछने की आवश्यकता है- कुरिन्थियों की कलीसिया में क्या हो रहा था? पौलुस ने उन्हें पत्र क्यों लिखा? हम इन प्रश्नों का उत्तर दो प्रकार से देंगे। पहला, हम पौलुस की तीसरी मिशनरी यात्रा की जांच करेंगे, और दूसरा, हम कुछ विशिष्ट समस्याओं को देखेंगे जो कुरिन्थ की कलीसिया में उत्पन्न हुई थीं। आइए पहले हम पौलुस की तीसरी मिशनरी यात्रा को देखते हैं।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

तीसरी मिशनरी यात्रा

पौलुस की तीसरी मिशनरी यात्रा के बारे में प्रेरितों के काम 18:23 से 21:17 में वर्णन किया गया है। इन अध्यायों में हम देखते हैं कि पौलुस ने मुख्यत: उसी मार्ग को दोहराया जिससे उसने अपनी दूसरी मिशनरी यात्रा में यात्रा की थी। पौलुस ने इस यात्रा का आरम्भ सन् 52 या 53 ईस्वी के लगभग किया था। अपनी पहली दो मिशनरी यात्राओं के समान उसने सीरिया के अन्ताकिया से यात्रा आरम्भ की। प्रेरितों के काम में हम देखते हैं कि उसने पूरे गलातिया और फ्रूगिया के विश्वासियों को दृढ़ किया। हमें यह नहीं[1] बताया गया है कि इन क्षेत्रों में वह किन नगरों में गया। संभवत:, वह कम से कम उन नगरों में गया होगा जहाँ उसने पिछली बार सेवा की थी, जैसे दिरबे, लुस्त्रा और गलातिया के इकुनियुम, और संभवत: फ्रूगिया के क्षेत्र के अन्ताकिया। गलातिया और फ्रूगिया से निकलने के पश्चात् पौलुस आसिया के क्षेत्र या एशिया माइनर में समुद्रतटीय नगर इफिसुस में पहुँचा।

इफिसुस में पहुँचने पर पौलुस का सामना यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के बारह चेलों से हुआ, जिन्होंने शीघ्र ही मसीह के सुसमाचार को ग्रहण कर लिया। पहले पौलुस ने आराधनालय में सुसमाचार का प्रचार किया, परन्तु लगभग तीन महीने के भीतर यहूदी उसके सन्देश के प्रति कठोर हो गए। इसलिए अगले दो वर्षों तक उसने नगर में और भी कई स्थानों में सुसमाचार सुनाया और आश्चर्यकर्म किए।

परन्तु, अन्तत:, पौलुस और उसके साथियों का सामना इफिसुस की मुख्य देवी अरतिमिस के मन्दिर बनाने वाले कारीगरों से होता है। पौलुस ने इतने अधिक लोगों को मसीह में जीत लिया था कि अन्यजातियों के मन्दिरों का बाजार अत्यधिक सीमित हो गया था। इसके फलस्वरूप कारीगरों ने इतना उत्पात मचाया जिसके कारण पौलुस के कुछ सथियों की सुरक्षा को खतरा उत्पन्न हो गया।

इस घटना के पश्चात्, पौलुस और उसके साथियों ने आधुनिक यूनान की सीमा में आने वाले क्षेत्रों मकिदूनिया और अखया में कई माह व्यतीत किए। लूका पौलुस की यात्रा के इस भाग के बारे में बहुत कम लिखता है, फिर भी वह बताता है कि इन लोगों ने आसिया में लौटने के लिए अपनी यात्रा फिलिप्पी के नगर से आरम्भ की। पौलुस और उसके साथी त्रोआस में जहाज से उतर गए। उसकी वहाँ केवल एक ही दिन रुकने की योजना थी, इसलिए उसने विश्वासियों को एकत्रित करके देर रात तक उनसे बात की। जब पौलुस बोल रहा था तो यूतुखुस नामक एक जवान सो गया और खिड़की से गिर कर मर गया। परन्तु पौलुस ने अद्‌भुत रीति से उसे पुन: जीवित कर दिया।

त्रोआस से पौलुस और उसके साथी पास के नगर अस्सुस में गए, जहाँ से उन्होंने पुन: समुद्री मार्ग लिया। वे मितुलेने, खियुस और सामोस में रूके, और अन्तत: मिलेतुस में पहुँचे, जहाँ वे थोड़े समय के लिए रूके। मिलेतुस में रहते समय, पौलुस ने निकटवर्ति नगर इफिसुस की कलीसिया के अगुवों को बुलावा भेजा। उसने कुछ अन्तिम निर्देश देने और आशीष देने के लिए उन्हें एकत्रित किया।

इसके पश्चात् उन्होंने पुन: यात्रा आरम्भ की। कोस, रूदुस, पतरा और साइप्रस से होते हुए वे सूर में पहुँचे, जहाँ उन्होंने एक सप्ताह तक सेवकाई की। वहाँ से वे जहाज पर पतुलिमयिस में फिर कैसरिया में आए जहाँ यहूदिया के एक भविष्यद्वक्ता अगबुस ने यरूशलेम में पौलुस की गिरफ्तारी की चेतावनी देकर उस सत्य की पुष्टि की जिसे पौलुस पहले से जानता था। फिर भी, अगबुस की चेतावनी या मित्रों के विनती करने पर भी पौलुस रूका नहीं, उसने यरूशलेम की यात्रा को जारी रखा, जहाँ वह सन् 57 ईस्वी के लगभग पहुँचा।

पौलुस ने इस तीसरी मिशनरी यात्रा के दौरान कैनन में शामिल इन दो पत्रियों के साथ-साथ दो अतिरिक्त पत्रियों को भी लिखा था जो अब अस्तित्व में नहीं हैं। 1कुरिन्थियों को संभवत: इफिसुस से सन् 55 ईस्वी में लिखा गया था। इस पत्री को भेजने के थोड़े समय बाद पौलुस कुछ समय के लिए कुरिन्थ में

1

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

आया, उस समय के दौरान वह वहाँ के कलीसिया के एक सदस्य के कारण अत्यधिक खेदित हुआ। इस यात्रा के पश्चात् उसने एक पत्र लिखा जो अब नहीं है, जिसे कई बार उसका "खेदपूर्ण पत्र" कहा जाता है। बाद में, तितुस से उसके खेदपूर्ण पत्र की सकारात्मक स्वीकृति के बारे में सूचना पाने के पश्चात्, पौलुस ने 2कुरिन्थियों को, संभवत: मकिदूनिया से, 1कुरिन्थियों को लिखने के लगभग एक वर्ष के भीतर ही लिखा।

अब जबकि हम यह देख चुके हैं कि कैसे कुरिन्थियों को लिखी पौलुस की पत्रियाँ इस तीसरी मिशनरी यात्रा की पृष्ठभूमि के अनुरूप हैं तो हमें कुरिन्थ की कलीसिया की कुछ विशिष्ट समस्याओं को देखना चाहिए। कौन से मुद्दे वहाँ अशान्ति फैला रहे थे? पौलुस को उन्हें इतनी बार पत्र क्यों लिखने पड़े?

कुरिन्थ में समस्याएँ

जैसा हमने प्रेरितों के काम अध्याय 18 में पढ़ा, पौलुस ने पिछली मिशनरी यात्रा के दौरान कुरिन्थियों की कलीसिया की स्थापना की थी, और उस समय कम से कम डेढ़ वर्ष तक कुरिन्थ में रहा था। परन्तु उसके प्रस्थान के पश्चात् कुरिन्थ के मसीही पौलुस की कुछ शिक्षाओं को भूल गए थे और कुछ का गलत प्रयोग किया था। इसके परिणामस्वरूप कलीसिया में कई महत्वपूर्ण संघर्ष और समस्याएँ उत्पन्न हो गई थीं।

जैसे हम देखेंगे, कुरिन्थ की कलीसिया में उत्पन्न हुई बहुत सी समस्याएँ युगान्तविद्या की गलत समझ के कारण हुई थीं, मसीह आने वाले युग को, अर्थात् उद्धार और जीवन के युग को किस प्रकार लेकर आया था। बहुत से कुरिन्थी यह मानने लगे थे कि उन्होंने वास्तव में किसी भी दूसरे व्यक्ति से अधिक भविष्य की आशीषों को पा लिया था; उनका सोचना था कि उन्होंने परमेश्वर की अन्तिम आशीषों को पहले ही प्राप्त कर लिया था।

हमारे उद्देश्यों के लिए, हम देखेंगे कि कैसे यह गलतफहमी चार स्पष्ट समस्याओं को जन्म देती है: पहली, कलीसिया के अन्दर टूटे हुए संबंध; दूसरी, लैंगिक दुराचरण; तीसरी, आराधना में दुर्व्यवहार; और चौथी, पौलुस के प्रेरित होने के अधिकार का तिरस्कार। आइए पहले हम टूटे हुए संबंधों की समस्या को देखते हैं।

टूटे हुए संबंध

पौलुस ने कुरिन्थियों को लिखी अपनी पत्रियों में विभिन्न प्रकार के टूटे हुए संबंधों को संबोधित किया, जैसे कलीसिया के अन्दर गुटबाजी, विश्वासियों के बीच मुकदमा, निर्धनों की अवहेलना, और यरूशलेम में निर्धनों की सेवा करने में असफलता। आइए पहले हम विरोधी गुटों की समस्या को देखते हैं।

1कुरिन्थियों को लिखने से पूर्व पौलुस को सूचना मिली थी कि कुरिन्थ के विश्वासी जिस शिक्षक को सबसे अधिक सम्मान देते थे उस से अपने आप को जोड़ने के द्वारा एक-दूसरे के विरोधी बन गए थे। देखें पौलुस 1कुरिन्थियों 1:12 में किस प्रकार उनकी इस मानसिकता का वर्णन करता है:

> तुम में से कोई तो अपने आप को "पौलुस का," कोई "अपुल्लोस का," कोई "कैफा का," तो कोई "मसीह का" कहता है। *(1कुरिन्थियों 1:12)*

पौलुस इन विश्वासियों को विभाजित करने वाली नगण्यता से भौंचक्का रह गया था। आखिर, पौलुस, अपुल्लोस, पतरस और यीशु सब ने एक ही बात सिखाई थी कि यीशु सर्वोच्च था और पतरस, पौलुस और अपुल्लोस जैसे प्रेरित और शिक्षक उसके दास थे। उन्होंने विरोधी विचारों को नहीं, बल्कि यीशु मसीह की कलीसिया को बनाने का प्रयास किया था। जैसे पौलुस ने 1कुरिन्थियों 3:5 और 11 में लिखा:

> अपुल्लोस क्या है? और पौलुस क्या है? केवल सेवक, जिनके द्वारा तुम ने विश्वास किया, जैसा हर एक को प्रभु ने दिया... क्योंकि उस नींव को छोड़ जो पड़ी है, और वह यीशु मसीह है, कोई दूसरी नींव नहीं डाल सकता। *(1कुरिन्थियों 3:5, 11)*

पतरस, पौलुस, अपुल्लोस और दूसरे मानवीय अगुवे सब बातों में यीशु की आज्ञा मानते थे। उन्होंने केवल वही किया था जो यीशु ने उनके लिए ठहराया था, अर्थात् सुसमाचार का प्रचार करना और उसकी कलीसिया को बनाना।

दुःखद रूप से, गुटबाजी केवल वैचारिक स्तर पर नहीं थी; यह उन रीतियों में भी प्रकट हुई जिस तरह कुरिन्थ के विश्वासी एक दूसरे को न्यायालय में घसीट रहे थे। देखें पौलुस ने 1कुरिन्थियों 6:7 और 8 में किस प्रकार इस परिस्थिति का वर्णन किया:

> परन्तु सचमुच तुम में बड़ा दोष तो यह है कि आपस में मुकदमा करते हो। अन्याय क्यों नहीं सहते? अपनी हानि क्यों नहीं सहते? परन्तु तुम तो स्वयं अन्याय करते और हानि पहुँचाते हो, और वह भी भाइयों को। *(1कुरिन्थियों 6:7-8)*

एक-दूसरे की परवाह का यह अभाव प्रभु भोज में निर्धनों के साथ होने वाले दुर्व्यवहार में भी प्रकट था। पौलुस ने 1कुरिन्थियों 11:21-22 में इस आचरण पर झिड़का:

> खाने के समय एक दूसरे से पहले अपना भोजन खा लेता है, इस प्रकार कोई तो भूखा रहता है और कोई मतवाला हो जाता है... क्या तुम परमेश्वर की कलीसिया को तुच्छ जानते हो, और जिनके पास कुछ नहीं है उन्हें लज्जित करते हो? *(1कुरिन्थियों 11:21-22)*

ऐसा स्वार्थी अहम् मसीहियों के बीच टूटे हुए संबंध के चौथे रूप की ओर भी ले गया, अर्थात् सहायतारूपी धन को एकत्रित करने में उनकी असफलता जिसकी उन्होंने यरूशलेम के निर्धन मसीहियों के लिए प्रतिज्ञा की थी। पौलुस ने 1कुरिन्थियों की पत्री को लिखने से पहले ही उन्हें इस धन को एकत्रित करने का निर्देश दिया था। परन्तु 2कुरिन्थियों की पत्री उनके पास भेजने के समय तक भी उन्होंने इसे पूरा नहीं किया था। 2कुरिन्थियों 8:10 और 11 में इस संबंध में पौलुस द्वारा उनको दिए गए उपदेश को देखें:

> एक वर्ष से न तो केवल इस काम को करने ही में, परन्तु इस बात के चाहने में भी प्रथम हुए थे। इसलिए अब यह काम पूरा करो कि जैसा इच्छा करने में तुम तैयार थे, वैसा ही अपनी अपनी पूंजी के अनुसार पूरा भी करो। *(2कुरिन्थियों 8:10-11)*

पौलुस ने यरूशलेम में सन्तों की आवश्यकता को पूरा करने की इच्छा अभिव्यक्त करने के लिए प्रशंसा की, परन्तु उनके द्वारा इस वायदे को पूरा करवाने के लिए उसे पूरे 2कुरिन्थियों 8 और 9 अध्यायों में इस मुद्दे पर जोर देना पड़ा।

लैंगिक दुराचरण

टूटे हुए संबंधों के अतिरिक्त कुरिन्थ की कलीसिया में कई अलग-अलग लैंगिक समस्याएँ भी स्पष्ट थीं। सामान्यत: ऐसा प्रतीत होता है कि बहुत से कुरिन्थियों का विश्वास था कि यीशु आ चुका था इसलिए लैंगिक मामले अब महत्वपूर्ण नहीं रहे थे। इस मानसिकता से लैंगिकता के प्रति दो अलग-अलग विचारों की उत्पत्ति होती है। एक ओर कलीसिया में कुछ लोगों ने लैंगिक लाइसेन्स का दृष्टिकोण अपना लिया था। इसके कारण संभवत: कई समस्याएँ उत्पन्न हुईं, जैसे शायद समलैंगिकता और वेश्यावृत्ति। परन्तु

पौलुस ने एक समस्या का स्पष्टत: वर्णन किया - एक व्यक्ति के अपनी सौतेली माँ से शारीरिक संबंध थे। इस संदर्भ में 1कुरिन्थियों 5:1 और 2 में पौलुस की झिड़की को देखें:

> यहाँ तक सुनने में आता है कि तुम में व्यभिचार होता है, वरन् ऐसा व्यभिचार जो अन्यजातियों में भी नहीं होता कि एक मनुष्य अपने पिता की पत्नी को रखता है। *(1कुरिन्थियों 5:1-2)*

इस सन्दर्भ में, यूनानी शब्द *एको*, जिसका अनुवाद यहाँ "रखता है," किया गया है, उसका अर्थ है, "लैंगिक रूप से साथ रहना।" कुरिन्थी अपने धर्मविज्ञान में इतने असमंजस में थे कि उन्हें वास्तव में इस व्यक्ति के अपनी सौतेली माँ से दैहिक संबंध होने की बात को सहन करने पर गर्व था

दूसरी ओर कुरिन्थ में कुछ विश्वासी दूसरे छोर पर चले गए थे, वे विवाह में भी तप और लैंगिक परहेज को प्राथमिकता देने लगे थे। पौलुस ने इस विचार की भी निंदा की क्योंकि यह विवाह की वाचा का उल्लंघन था और पति-पत्नी दोनों को व्यभिचार की परीक्षा के ख़तरे में डाल देता था। जैसा उसने 1कुरिन्थियों 7:2-5 में लिखा:

> व्यभिचार के डर से हर एक पुरूष की पत्नी, और हर एक स्त्री का पति हो। पति अपनी पत्नी का हक पूरा करे; और वैसे ही पत्नी भी अपने पति का...तुम एक दूसरे से अलग न रहो; परन्तु केवल कुछ समय तक आपस की सम्मति से... और फिर एक साथ रहो; ऐसा न हो कि तुम्हारे असंयम के कारण शैतान तुम्हें परखे। *(1कुरिन्थियों 7:2-5)*

यूनानी शब्द *एको* इस पद में भी आता है, जहाँ उसका अनुवाद "हो" के अर्थ में किया गया है, "हर पुरूष की अपनी पत्नी हो।" जैसे हमने पहले ध्यान दिया, इस प्रकार के सन्दर्भ में *एको* का अर्थ है "लैंगिक रूप से साथ रहना।" पौलुस ने विवाहित जोड़ों को उचित, निरन्तर शारीरिक संबंध बनाए रखने की प्रेरणा दी ताकि वे अपने विवाह की वाचा को पूरा करें और अपने आप को व्यभिचार की परीक्षा से बचाए रखें।

आराधना में दुर्व्यवहार

आराधना में गलत आचरण कुरिन्थियों की कलीसिया की तीसरी बड़ी समस्या थी। हम पहले ही देख चुके हैं कि इनमें से एक प्रभु भोज के दौरान निर्धनों से गलत व्यवहार करना था। इससे बढ़कर, तीन दूसरे मुद्दों के संबंध में भी मामले उठे- पुरूष और स्त्री की भूमिकाएँ, आत्मिक वरदानों का उपयोग, और मूरतों को अर्पित किया गया माँस।

सबसे पहले, पौलुस सार्वजनिक आराधना में पुरूषों और स्त्रियों के आचरण के बारे में चिन्तित था। एक सलाह जो उसने दी वह प्रार्थनाओं के दौरान सिर को ढ़कने से संबंधित थी। 1कुरिन्थियों 11:4 और 5 में उसने लिखा:

> जो पुरूष सिर ढाँके हुए प्रार्थना या भविष्यद्वाणी करता है, वह अपने सिर का अपमान करता है। परन्तु जो स्त्री उघाड़े सिर प्रार्थना या भविष्यद्वाणी करती है, वह अपने सिर का अपमान करती है। *(1 कुरिन्थियों 11:4-5)*

विद्वान इस बात पर असहमत हैं कि पौलुस प्रार्थना में ओढ़नी या परदे की बात कर रहा था, या वह केशविन्यास की रीतियों के बारे में बता रहा था। उस "सिर" की पहचान के बारे में भी सर्वसम्मति का अभाव है जिसका अपमान होता है। कुछ लोग सोचते हैं "सिर" व्यक्ति की देह के अंग के बारे में बताता है, जबकि दूसरों का मानना है कि पुरूष का सिर मसीह है और स्त्री का सिर पुरूष है। परन्तु इन शब्दों

का आशय चाहे जो भी हो, मूलभूत मुद्दा स्पष्ट है - पुरूष और स्त्री आराधना में, आँशिक रूप में, लिंगभेद के उचित अन्तर को धुँधला करने के द्वारा अपमानजनक व्यवहार कर रहे थे।

पौलुस आराधना में आत्मिक वरदानों के उपयोग की भी चर्चा करता है।

स्पष्टत:, बहुत से कुरिन्थी विश्वासियों के पास अन्यभाषा और भविष्यद्वाणी जैसे विशिष्ट वरदान थे, और वे आराधना सभाओं में उनका इतना अधिक प्रयोग करते थे कि अव्यवस्था उत्पन्न हो जाती थी। 1कुरिन्थियों 14:26 से 33 में पौलुस ने इस परिस्थिति को इस प्रकार संबोधित किया:

> हर एक के हृदय में भजन या उपदेश या अन्य भाषा या प्रकाश या अन्य भाषा का अर्थ बताना रहता है... यदि अन्य भाषा में बातें करनी हों तो दो या बहुत हो तो तीन जन बारी-बारी से बोलें, और एक व्यक्ति अनुवाद करे... भविष्यद्वक्ताओं में से दो या तीन बोलें, और शेष लोग उनके वचन को परखें। परन्तु यदि दूसरे पर जो बैठा है, कुछ ईश्वरीय प्रकाश हो तो पहला चुप हो जाए... क्योंकि परमेश्वर गड़बड़ी का नहीं, परन्तु शान्ति का परमेश्वर है। ***(1कुरिन्थियों 14:26-33)***

यहाँ पौलुस के शब्दों से ऐसा प्रतीत होता है कि बहुत से लोगों के एक साथ बोलने के कारण कुरिन्थ में आराधना सभाएँ असमंजसपूर्ण और अव्यवस्थित थीं। पौलुस ने बल दिया कि जब तक विश्वासी एक-दूसरे की सुनेंगे नहीं और एक-दूसरे को स्वीकार नहीं करेंगे, तब तक उन्हें उन शब्दों से कोई लाभ नहीं होगा जो पवित्र आत्मा ने दिए हैं।

तीसरा, हमें मूरतों को चढ़ाए गए बलिदान के मुद्दे का वर्णन करना चाहिए। प्राचीन संसार में, बाजार में बिकने वाला अधिकाँश माँस मूरतों को चढ़ाया हुआ या बलिदान किया हुआ होता था, और भोजन को अन्यजातियों के मन्दिरों से सीधे भी प्राप्त किया जा सकता था। अब, पौलुस ने बल दिया कि अन्यजातियों की पूजा की रीतियाँ माँस को दूषित नहीं करती, और मसीही इस भोजन को तब तक खा सकते थे जब तक कि वे अन्यजाति पूजा की क्रिया के रूप में ऐसा न करें। परन्तु उसने यह चेतावनी भी दी कि गलत विवके के साथ खाने वाले विश्वासी मूर्तिपूजा कर बैठते थे। उसने 1कुरिन्थियों 8:7 में यह लिखते हुए इस मुद्दे को संबोधित किया:

> कुछ तो अब तक मूर्ति को कुछ समझने के कारण मूर्तियों के सामने बलि की हुई वस्तु को कुछ समझकर खाते हैं, और उनका विवेक निर्बल होने के कारण अशुद्ध हो जाता है। ***(1कुरिन्थियों 8:7)***

आसान शब्दों में, मूरतों को बलि किए हुए माँस को खाने के द्वारा धर्मविज्ञान की बहुत कम समझ रखने वाले कुरिन्थ के मसीही मसीह की आराधना को अन्यजातियों के ईश्वरों की पूजा से मिला रहे थे। पौलुस ने यह भी संकेत दिया कि परिपक्व मसीही भी तब पाप कर बैठते थे जब उनके खाने के कारण उनके कमजोर भाई की दुविधा बढ़ जाती थी। जैसा उसने 1कुरिन्थियों 8:10 और 12 में लिखा:

> यदि कोई तुझ ज्ञानी को मूर्ति के मन्दिर में भोजन करते देखे और वह निर्बल जन हो, तो क्या उसके विवेक को मूर्ति के सामने बलि की हुई वस्तु खाने का साहस न हो जाएगा...इस प्रकार भाइयों के विरूद्ध अपराध करने से और उनके निर्बल विवेक को चोट पहुँचाने से, तुम मसीह के विरूद्ध अपराध करते हो। ***(1कुरिन्थियों 8:10, 12)***

अपने साथी विश्वासियों का इस प्रकार ध्यान रखने में असफल रहने के कारण वे आँशिक रूप से अपने निर्बल भाइयों के पाप के लिए जिम्मेदार थे।

हम देख सकते हैं कि पौलुस कुरिन्थियों की आराधना में विविध प्रकार के दुर्व्यवहारों से बहुत चिन्तित था। परन्तु इन सारी समस्याओं के मूल में यह बात थी कि वे स्वार्थी और घमण्डी थे। उन्होंने अपने आपको ऐसे आचरण से नहीं रोका, उस समय भी नहीं जब उनके ऐसे आचरण के कारण दूसरे लोग मूर्तिपूजा जैसे भयानक पापों में गिर जाते थे। जैसे हम इस अध्याय में बाद में देखेंगे, दूसरों का आदर और सम्मान करने से यह इन्कार इतना गलत और दोषपूर्ण था कि कई बार यह उनकी आराधना को व्यर्थ कर देता था।

पौलुस के प्रेरित होने के अधिकार की अस्वीकृति

चौथी समस्या जिसका हमें वर्णन करना चाहिए वह थी एक प्रेरित के रूप में पौलुस के अधिकार की अस्वीकृति। यह उनकी संभवत: सबसे बड़ी समस्या थी। जैसे हम पहले ही 1कुरिन्थियों 1:12 में पढ़ चुके हैं, कुरिन्थ में बहुत से लोगों ने अपने गुटों के लिए प्रतिद्वन्द्वी मुख्य लोगों को चुनकर पौलुस के अधिकार को निम्न कर दिया था। अभी हमें जिसे देखना है वह बात यह है कि अपनी दोनों पत्रियों में पौलुस को उन लोगों के विरूद्ध अपने प्रेरित होने का बचाव करना पड़ा जो उसके श्रेय को पूर्णत: समाप्त की खोज में थे। उदाहरण के लिए, 1कुरिन्थियों 9:1 से 3 में उसने लिखा:

> क्या मैं प्रेरित नहीं? यदि मैं दूसरों के लिए प्रेरित नहीं, तौभी तुम्हारे लिए तो हूँ; क्योंकि तुम प्रभु में मेरी प्रेरिताई पर छाप हो। जो मुझे जाँचते हैं, उनके लिए यही मेरा उत्तर है। *(1कुरिन्थियों 9:1-3)*

और 2कुरिन्थियों 12:11 और 12 में उसने बल दिया:

> तुम्हें तो मेरी प्रशंसा करनी चाहिए थी, क्योंकि यद्यपि मैं कुछ भी नहीं, तौभी उन बड़े से बड़े प्रेरितों से किसी बात में कम नहीं हूँ... प्रेरित के लक्षण भी तुम्हारे बीच सब प्रकार के धीरज सहित चिन्हों, और अद्भुत कामों, और सामर्थ के कामों से दिखाए गए। *(2कुरिन्थियों 12:11-12)*

कुरिन्थ के कुछ विश्वासी अपने आप में इतने पूर्ण हो गए थे कि उन्होंने वास्तव में उसी प्रेरित के अधिकार को अस्वीकार कर दिया जो उन्हें मसीह में लाया था। और उसके स्थान में वे उन तथाकथित "बड़े प्रेरितों" की ओर देखते थे जो वास्तव में प्रेरित थे ही नहीं।

ये झूठे प्रेरित पौलुस और अन्य वैध प्रेरितों के समान ही अधिकार रखने का दावा करते थे। और उन्होंने झूठा सुसमाचार भी सिखाया था जो बहुत से कुरिन्थी मसीहियों को पापपूर्ण विचार और जीवनशैली की ओर लुभा रहा था। 2कुरिन्थियों 11:12 से 15 में पौलुस ने इन दुष्ट मनुष्यों की कठोर शब्दों में आलोचना की:

> जो मैं करता हूँ, वही करता रहूँगा कि जो लोग दाँव ढूँढ़ते हैं उन्हें मैं दाँव पाने न दूँ, ताकि जिस बात में वे घमण्ड करते हैं, उसमें वे हमारे ही समान ठहरें। क्योंकि ऐसे लोग झूठे प्रेरित, और छल से काम करने वाले, और मसीह के प्रेरितों का रूप धरने वाले हैं। यह कुछ अचम्भे की बात नहीं क्योंकि शैतान आप भी ज्योतिर्मय स्वर्गदूत का रूप धारण करता है। इसलिए यदि उसके सेवक भी धर्म के सेवकों का सा रूप धरें, तो कोई बड़ी बात नहीं। *(2कुरिन्थियों 11:12-15)*

पौलुस ने अत्यधिक कठोर भाषा में इन व्यक्तियों का खण्डन किया क्योंकि वह जानता था कि उनके झूठ के घातक परिणाम हो सकते थे। यदि कुरिन्थियों ने झूठे प्रेरितों को स्वीकार और पौलुस की शिक्षा को अस्वीकार कर दिया तो वे मसीह और सुसमाचार दोनों का इन्कार कर देंगे।

अत: हम देख सकते हैं कि पौलुस के सामने कई समस्याएँ थीं जब उसने कुरिन्थियों को पत्र लिखा। जैसे हम देखेंगे, पूरे 1 और 2 कुरिन्थियों में यही समस्याएँ पौलुस के विचारों पर हावी थीं।

संरचना और विषय सूची

अब जबकि हमने कुछ महत्वपूर्ण मुद्दों को देख लिया है जो कुरिन्थ की कलीसिया को लिखी पौलुस की पत्रियों की पृष्ठभूमि की रचना करते हैं, तो हम इन पत्रियों की विषय-सूची को देखने के लिए तैयार हैं। हम कैनन में सम्मिलित कुरिन्थियों को लिखी पत्रियों के मुख्य भागों के विषयों का साराँश बताने के द्वारा उन में से प्रत्येक को संक्षेप में देखेंगे। आइए हम 1कुरिन्थियों से आरम्भ करें।

1कुरिन्थियों

कुरिन्थियों की पहली पत्री वास्तव में दूसरी पत्री है जो हम जानते हैं कि पौलुस ने कुरिन्थ की कलीसिया को लिखी थी। 1कुरिन्थियों 5:9 में पौलुस ने इन शब्दों को शामिल करने के द्वारा पिछली पत्री के अस्तित्व का संकेत दिया, “मैं ने अपनी पत्री में तुम्हें लिखा है।” कुरिन्थियों ने भी पौलुस को एक पत्र भेजा था जिसका वर्णन 1कुरिन्थियों 7:1 में है, और बहुत से बिन्दुओं पर 1कुरिन्थियों की पत्री कलीसिया के पत्र में उठाए गए मुद्दों का जवाब देती प्रतीत होती है।

पहला कुरिन्थियों चार मुख्य भागों में विभाजित है: अध्याय 1:1 से 3 में अभिवादन; अध्याय 1:4 से 9 में धन्यवाद; अध्याय 1:10 से अध्याय 16:12 में मुख्य भाग जिस में पत्रों और सूचनाओं का जवाब शामिल है; और अध्याय 16:13 से 24 में समाप्ति।

अभिवादन

अभिवादन संक्षिप्त है और दर्शाता है कि पत्री पौलुस और सोस्थिनेस की ओर से है, और यह कुरिन्थ की कलीसिया के लिए है। इस में लघु आशीष भी सम्मिलित है जो अभिवादन का कार्य करती है।

आभार-प्रदर्शन

आभार-प्रदर्शन भी लघु है और कुरिन्थियों के विश्वास और आत्मिक वरदानों के लिए और उद्धार के प्रति आश्वस्त होने के लिए पौलुस की कृतज्ञता को व्यक्त करता है।

समाप्ति

समाप्ति में कई सामान्य उपदेश, स्तिफनास और उसके घराने का समर्थन, अन्तिम अभिवादन, आशीष, और पत्री की विश्वसनीयता को प्रमाणित करने वाली पौलुस के स्वयं के हाथों से लिखी टिप्पणी सम्मिलित है।

मुख्य भाग

मुख्य भाग दो हिस्सों से निर्मित है। अध्याय 1:10 से अध्याय 6:20 में पौलुस का उन सूचनाओं के बारे में प्रत्युत्तर शामिल है जो उसे खलोए के घराने से प्राप्त हुई थीं। और अध्याय 7:1 से अध्याय 16:12 में पौलुस का उस पत्र के बारे में प्रत्युत्तर शामिल है जो उसे कुरिन्थ की कलीसिया से प्राप्त हुआ था। इन दो

भागों में से पहले में पौलुस ने तीन मुख्य विषयों को संबोधित किया जो खलोए के घराने के सन्देशों द्वारा उसके ध्यान में लाए गए थे- कलीसिया में गुटबाजी; अनैतिकता; और मसीही संबंध।

जैसा हम पहले ही देख चुके हैं, कुरिन्थियों की कलीसिया में कई समस्याएँ थीं जिनके परिणामस्वरूप विभाजन उत्पन्न हुआ था। वे पौलुस, पतरस, अपुल्लोस और यीशु जैसे विशिष्ट कलीसियाई अगुवों के प्रति वफादारी में बँटे हुए थे। वे एक-दूसरे के विरूद्ध मुकदमों में विभाजित थे। और वे अपने बीच रहने वाले निर्धनों और यरूशलेम के निर्धनों के प्रति अहंकारी हो गए थे। पौलुस कुछ अलग-अलग तरीकों से इस समस्या पर चर्चा करता है।

उदाहरण के लिए, उसने तर्क दिया कि यदि उन्होंने अपने प्राथमिक अगुवे के रूप में केवल यीशु की ही ओर देखा होता, और प्रेरितों और शिक्षकों को मसीह के सेवकों के रूप में माना होता तो कुरिन्थियों में कुछ विशेष प्रेरितों और शिक्षकों को दी जाने वाली प्राथमिकता के कारण टकराव नहीं होता। कलीसिया के प्रेरितों और शिक्षकों को अत्यधिक सम्मान देने के द्वारा यीशु पर से उनकी दृष्टि हट गई थी जो उन सब से कहीं अधिक ज्योतिर्मय था।

पौलुस ने आत्मिक मामलों से निपटने के लिए सांसारिक बुद्धि की पूर्ण अयोग्यता के बारे में भी विस्तार से लिखा। स्पष्टत: कुरिन्थियों की कलीसिया का प्रभावशाली अल्पसंख्यक वर्ग मुख्यत: ऐसे लोगों का था जिन्हें सांसारिक समाज धनी और शिक्षित वर्ग के रूप में सम्मान देता था। उनकी अगुवाई में शेष कलीसिया ने भी सांसारिक मूल्यों को मानने की दौड़ में उनका अनुसरण किया था। उदाहरण के लिए अध्याय 1:19 और 20 में उसने लिखा:

> क्योंकि लिखा है, "मैं ज्ञानवानों के ज्ञान को नष्ट करूँगा, और समझदारों की समझ को तुच्छ कर दूँगा।" कहाँ रहा ज्ञानवान? कहाँ रहा शास्त्री? कहाँ रहा इस संसार का विवादी? क्या परमेश्वर ने संसार के ज्ञान को मूर्खता नहीं ठहराया? ***(1कुरिन्थियों 1:19-20)***

कुरिन्थियों को यह बताने के अतिरिक्त कि संसार के समान सोचने के कारण वे मूर्ख थे, वह उन्हें यह भी बताता है कि वे आत्मिक रूप से अपरिपक्व थे। अध्याय 3:1 और 2 में उसने लिखा:

> हे भाइयो, मैं तुम से इस रीति से बातें न कर सका जैसे आत्मिक लोगों से, परन्तु जैसे शारीरिक लोगों से, और उनसे जो मसीह में बालक हैं। मैं ने तुम्हें दूध पिलाया, अन्न न खिलाया; क्योंकि तुम उसको नहीं खा सकते थे; वरन् अब भी नहीं खा सकते हो। ***(1कुरिन्थियों 3:1-2)***

दूसरे शब्दों में, विभाजक कुरिन्थी अपनी बुद्धि और परिपक्वता में स्वयं को श्रेष्ठ मानते थे, जबकि यथार्थ में वे कुछ भी नहीं जानते थे, और परमेश्वर के लोगों की अगुवाई करने के योग्य होने के निकट भी नहीं थे। उनके सांसारिक मूल्यों ने उन्हें आत्मिक सत्य के प्रति अन्धा कर दिया था।

पौलुस ने उस अनैतिकता के लिए भी कुरिन्थियों को ताड़ना दी जिसकी उसे सूचना मिली थी। हम पहले ही उस व्यक्ति के विषय का वर्णन कर चुके हैं जिसके अपनी सौतेली माँ से दैहिक संबंध थे। पौलुस ने अध्याय 5:1-13 में उस विषय को संबोधित किया। परन्तु अध्याय 6:12-20 में वह इस विषय के बारे में अधिक सामान्य रूप से लिखता है, जहाँ हमें पता चलता है कि कुरिन्थियों ने प्रत्यक्षत: इस कथन का दुरूपयोग किया था: "मेरे लिए सब कुछ उचित है।" पौलुस ने पद 12 और 13 में इस कथन के बारे में लिखकर प्रत्यक्ष रूप से इस गलती का जवाब दिया:

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> सब वस्तुएँ मेरे लिए उचित तो हैं, परन्तु सब वस्तुएँ लाभ की नहीं; सब वस्तुएँ मेरे लिए उचित हैं, परन्तु मैं किसी बात के अधीन न हूँगा... देह व्यभिचार के लिए नहीं, वरन् प्रभु के लिए है, और प्रभु देह के लिए है। *(1कुरिन्थियों 6:12-13)*

जैसा हम देख चुके हैं, कुछ कुरिन्थी सोचते थे कि अब जबकि मसीह आ गया था इसलिए किसी भी प्रकार का लैंगिक आचरण उचित था।

अब, अध्याय 6 में पौलुस ने परस्त्रीगमन, व्यभिचार, पुरूषगमन, वेश्यावृत्ति, और समलैंगिकता सहित कई लैंगिक पापों का वर्णन किया जो मसीह में आने से पहले कुरिन्थियों की विशेषता थे। यह संभव है, यद्यपि निश्चित नहीं, कि अनैतिकता के बारे में उसके कथन कुरिन्थ की कलीसिया के उन सदस्यों के लिए थे जो अब भी इन गतिविधियों में शामिल थे। किसी भी हालत में, कलीसिया द्वारा एक ऐसे व्यक्ति को सहन करना, जो अपनी सौतेली माँ से शारीरिक संबंध रखता था, इस क्षेत्र में उनकी लापरवाही का स्पष्ट प्रदर्शन था।

अन्ततः, पौलुस ने कुछ निर्देशों को स्पष्ट किया जो उसने पूर्व में मसीही संबंध के बारे में कलीसिया को दिए थे। वह चाहता था कि वे संसार में अविश्वासियों से अपने संबंध बनाए रखें, परन्तु उन घोर पापियों से दूर रहें जो विश्वासी होने का दावा करते थे परन्तु परमेश्वर के लोगों पर अपमान लाते थे, जैसे कि वह व्यक्ति जिसके अपनी सौतेली माँ के साथ शारीरिक संबंध थे। ऐसे विषयों में कुरिन्थियों की कलीसिया को, यदि आवश्यक हो तो, दोषियों को कलीसिया से निष्कासित करके उचित कलीसियाई अनुशासन का प्रयोग करना था। उसने अध्याय 5:9 से 11 में इन निर्देशों को संक्षेप में बताया:

> मैं ने अपनी पत्री में तुम्हें लिखा है कि व्यभिचारियों की संगति न करना। यह इस जगत के लोगों के बारे में नहीं है... क्योंकि इस दशा में तो तुम्हें जगत में से निकल जाना ही पड़ता। पर मेरा कहना यह है कि यदि कोई भाई कहलाकर, व्यभिचारी, या लोभी, या मूर्तिपूजक, या गाली देनेवाला, या पियक्कड़, या अन्धेर करने वाला हो, तो उसकी संगति मत करना। *(1कुरिन्थियों 5:9-11)*

1कुरिन्थियों के मुख्य भाग का दूसरा बड़ा हिस्सा अध्याय 7:1 से अध्याय 16:12 तक है। यहीं पर हम कुरिन्थियों की कलीसिया के सवालों के बारे में पौलुस के जवाबों को देखते हैं: अध्याय 7:1 से 40 में विवाह के विषयों पर; 8 से 10 अध्यायों में मूरतों को बलि किए गए माँस के बारे में; अध्याय 11:2 से 34 आराधना के बारे में सवालों पर चर्चा करता है और कुरिन्थियों के सवालों के जवाब के रूप में नहीं माना जाता है; 12 से 14 अध्यायों में आत्मिक वरदान; अध्याय 15 सारे विश्वासियों के पुनरूत्थान के विषय का परिचय देता है; अध्याय 16:1 से 12 में यरूशलेम की कलीसिया के लिए धन और अपुल्लोस।

पहले पौलुस ने जिन प्रश्नों के जवाब दिए वे विवाह, पुनर्विवाह, और अविवाहित रहने से संबंधित थे। पौलुस ने इस विषयों को अध्याय 7:1 से 40 में लिया। कुरिन्थ में कुछ विश्वासियों ने विवाह में भी सन्यास और लैंगिक परहेज को अपना लिया था। ऐसा प्रतीत होता है कि सन्यास के प्रति कुछ कुरिन्थी विश्वासियों की प्रवृत्ति ने विवाह में लैंगिक व्यवहार और विवाह की मान्यता के बारे में ही सवाल खड़े कर दिए थे। इसके जवाब में पौलुस ने विवाह करने और अविवाहित रहने दोनों की पुष्टि की और बल दिया कि विवाह में लैंगिक तत्व का शामिल होना आवश्यक है। परन्तु उसने यह भी सिखाया कि अविवाहित रहना विवाह करने से अधिक लाभप्रद है क्योंकि अविवाहित रहना विश्वासियों को "प्रभु की बातों" यानि, मसीह के राज्य की रूचियों पर अधिक ध्यान लगाने में अनुमति देता है। कुछ लोगों का मानना है कि पौलुस ने केवल संकटावस्था के दौरान ही अविवाहित रहने को विवाह करने से अधिक प्राथमिकता दी, जबकि अन्य उसके निर्देशों को मसीह के प्रथम आगमन के बाद से हर समय के सारे विश्वासियों पर समान रूप से लागू करते हैं।

अध्याय 8 से 10 में, पौलुस मूरतों को चढ़ाए गए बलि के विषय पर बात करता है। हम मन्दिरों में मूरतों के समक्ष परोसे जाने वाले भोजन के बारे में पहले ही बता चुके हैं, जो अध्याय 8 का मुख्य विषय है। परन्तु सामान्य व्यवहार में अन्यजातियों के मन्दिरों में बलि चढ़ाए हुए सारे पशुओं के माँस को खाया या परोसा नहीं जाता था, और अक्सर शेष माँस को बेच दिया जाता था। अत: अध्याय 10 में पौलुस ने बाजार में बिकने वाले माँस के बारे में लिखा। उसने इस माँस को खाने वाले विश्वासियों का बचाव किया, यदि वे इसे अन्यजातिरूपी उपासना या अपने विवेक के उल्लंघन में ऐसा नहीं करते। परन्तु उसने उन्हें उस समय भी न खाने के लिए कहा जब उनके कार्यों को मूर्तिपूजा के रूप में समझे जाने की संभावना हो। अध्याय 9 की सामग्री में उसने मसीही स्वतंत्रता को सीमित करने की अपनी स्वयं की इच्छा का वर्णन किया, अप्रत्यक्ष रूप से दूसरों से भी ऐसा ही करने के लिए कहा।

अध्याय 11 में, पौलुस आराधना से संबंधित दो विषयों की ओर मुड़ता है- लिंगभेद की भूमिका, जिसका वर्णन उसने पद 2 से 16 में किया, और प्रभु भोज के दौरान निर्धनों से दुर्व्यवहार, जिसके बारे में वह पद 17 से 34 में लिखता है। वही अहंकार और अहम् जिसके कारण कलीसिया में गुटबाजी एवं मुकदमे हुए, और भोजन के द्वारा निर्बल मसीहियों को ठोकर खिलाई गई, उसी ने ऐसे विश्वासियों को भी उत्पन्न किया जो आराधना में एक दूसरे का अनादर करते थे। कोई आश्चर्य नहीं कि पौलुस का हल केवल ठेस पहुँचाने वाले व्यवहारों को रोकना ही नहीं बल्कि उनकी मानसिकता को भी बदलना था।

12 से 14 अध्यायों में, पौलुस ने आत्मिक वरदानों से संबंधित समस्याओं को संबोधित किया। अध्याय 12 में उसने बताया कि पवित्र आत्मा ने ये वरदान उन वरदान पाने वाले लोगों की प्रतिष्ठा को बढ़ाने के लिए या धार्मिकता के ईनाम के रूप में नहीं दिए थे बल्कि उसने कलीसिया की आवश्यकताओं के अनुसार लोगों को वरदान दिए।

अध्याय 13 में, जिसे सामान्यत: "प्रेम के अध्याय" के रूप में जाना जाता है, पौलुस ने बताया कि सारे आत्मिक वरदान प्रेम में प्रयोग करने के लिए थे, और यदि उनका प्रयोग इस प्रकार नहीं किया जाता तो वे व्यर्थ हैं।

अन्तत:, अध्याय 14 में उसने कुरिन्थियों कों उनकी अव्यवस्थित आराधना सभाओं के लिए डाँटा और उन्हें निर्देश दिया कि उन्हें किस प्रकार सार्वजनिक आराधना में वरदानों के प्रयोग को सीमित करना था।

अध्याय 15 सारे विश्वासियों के पुनरूत्थान के विषय का परिचय देता है। स्पष्टत:, कुरिन्थियों की कलीसिया में कुछ लोग इस बात को नहीं मानते थे कि विश्वासियों का दैहिक पुनरूत्थान होगा। इस भ्रांति के जवाब में पौलुस ने बताया कि मसीह का पुनरुत्थान सुसमाचार की कुंजी है और विश्वासियों को अन्तिम उद्धार प्राप्त करने के लिए यीशु के समान ही जी उठना होगा।

पौलुस ने अध्याय 16:1 से 12 में यरूशलेम के निर्धनों के लिए दान एकत्रित करने के बारे में निर्देश देकर और अपुल्लोस के बारे में कुछ टिप्पणियाँ करके कुरिन्थियों के सवालों के उत्तरों को पूर्ण किया।

अब जबकि हम 1कुरिन्थियों की विषय-सूची को देख चुके हैं, तो हमें अपना ध्यान कुरिन्थियों को लिखी कैनन में शामिल पौलुस की दूसरी पत्री पर लगाना चाहिए।

2कुरिन्थियों

दूसरे कुरिन्थियों की रूपरेखा विविध प्रकार से बनाई जा सकती है। हमने इसकी सामग्री को चार मुख्य शीर्षकों में प्रस्तुत करने का निर्णय लिया है: अभिवादन अध्याय 1:1 और 2 में; परिचय अध्याय 1:3 से 11 में; मुख्य भाग अध्याय 1:12 से अध्याय 13:10 में; और समाप्ति अध्याय 13:11 से 14 में।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

अभिवादन

अभिवादन बताता है कि पत्री पौलुस और तिमुथियुस की ओर से है और कुरिन्थ की कलीसिया और अखया के क्षेत्र के पवित्र लोगों के लिए लिखी गई है। इसमें एक लघु आशीष भी है जो अभिवादन का कार्य करती है।

परिचय

परिचय को शामिल करना पौलुस के लिए कुछ असामान्य है। यह विशेष परिचय उस घोर कष्ट का वर्णन करता है जिसे पौलुस ने सेवकाई की खातिर सहा और साथ ही उस सांत्वना का भी जो उसे परमेश्वर से प्राप्त हुई। यह प्राथमिक रूप से कुरिन्थियों को पौलुस के तर्कों के प्रति सहानुभूति प्रकट करवाने का कार्य करता है, परन्तु साथ ही यह उन सारे विश्वासियों को बड़ी सांत्वना भी देता है जो सुसमाचार के कारण दुःख सहते हैं, प्रभु को भी "सारी शान्ति का परमेश्वर" कहा गया है। इससे बढ़कर, यह कष्ट सहने वालों को प्रोत्साहित करता है कि वे अपने अनुभव से कष्ट सहने वालों को सांत्वना देना सीख़ें।

समाप्ति

समाप्ति संक्षिप्त है, जिस में कुछ सामान्य निर्देश और अन्तिम अभिवादन है।

मुख्य भाग

मुख्य भाग में पत्री का अधिकाँश हिस्सा शामिल है, और इसके पाँच मुख्य हिस्से हैं: अध्याय 1 पद 12 से अध्याय 2 पद 11 में पौलुस के आचरण का बचाव; अध्याय 2 पद 12 से अध्याय 7 पद 1 में पौलुस की सेवकाई का बचाव; अध्याय 7 पद 2 से अध्याय 9 पद 15 में यरूशलेम के लिए दान एकत्रित करने के बारे में निर्देश; अध्याय 10 पद 1 से अध्याय 12 पद 13 में निरन्तर पौलुस की सेवकाई का बचाव; और अध्याय 12 पद 14 से अध्याय 13 पद 10 में पौलुस की आगामी यात्रा की चर्चा।

अध्याय 1:12 से अध्याय 2:11 में पौलुस ने दो मामलों में अपने आचरण का बचाव किया। पहला, उसने बताया कि क्यों वह कुरिन्थ में नहीं आया था जैसी उसने पहले योजना बनाई थी, और दूसरा, उसने एक गलत व्यवहार के बारे में बताया जो कुरिन्थियों में से एक व्यक्ति ने उसके साथ किया था। जब पौलुस ने कुरिन्थ में आने की अपनी योजना के बारे में बताया था तो उसके और कुरिन्थियों में से कुछ के बीच एक संघर्ष उत्पन्न हुआ। इसके परिणामस्वरूप, पौलुस जानता था कि यदि वह वहाँ गया तो उसे उन लोगों का सामना करना पड़ेगा, शायद उनकी ताड़ना भी करनी पड़े। इसलिए, अपनी तरफ से क्षमा के रूप में उसने अपनी यात्रा की योजनाओं को बदल दिया। कुरिन्थ के कई मसीही इसे नहीं समझ पाए कि यह एक दया का कार्य था, और उसके पीछे हटने से उन्हें ठेस पहुँची। कुछ लोगों ने उसकी विश्वसनीयता पर भी सवाल उठाए।

पौलुस ने एक विश्वासी के बारे में भी बताया जिसने उसके साथ दुर्व्यवहार किया था और जिसकी बाद में कलीसिया ने ताड़ना की थी। पौलुस ने कलीसिया को आश्वस्त किया कि उसने उस व्यक्ति को क्षमा कर दिया था, और उसकी ताड़ना पर्याप्त थी। और उसने कलीसिया को उस व्यक्ति के साथ अपने प्रेम की पुन: पुष्टि करने और उसे वापस उनकी संगति में लेने के निर्देश दिए।

अध्याय 2:12 से अध्याय 7:1 में पौलुस कहीं अधिक गम्भीर विषय के बारे में बात करता है- कुरिन्थियों की कलीसिया में कुछ लोग अब भी पौलुस की प्रेरिताई पर सन्देह करते थे। जैसा हम पहले ही देख चुके हैं, पौलुस ने 1कुरिन्थियों में इस मुद्दे के बारे में बात की थी। परन्तु 2कुरिन्थियों में उसके वचनों से यह स्पष्ट है कि कुरिन्थ में कुछ मसीहियों ने अपनी गलती से मन फिराया था। अत: पौलुस यह घोषणा करते हुए अपनी सेवकाई की प्रकृति का विस्तार से बचाव करता है कि उसकी बुलाहट और उसकी

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

सामर्थ दोनों परमेश्वर की ओर से थी और स्पष्ट करता है कि उसकी प्रेरिताई को अस्वीकार करने के परिणाम गम्भीर हो सकते थे।

वास्तव में, 2कुरिन्थियों अध्याय 5:18 और 20 में वह यहाँ तक कहता है कि जो लोग उसकी प्रेरिताई पर सन्देह करते हैं उन्होंने उद्धार नहीं पाया है:

> ...परमेश्वर ... ने मसीह के द्वारा मेल-मिलाप की सेवा हमें सौंप दी है। अर्थात् परमेश्वर ने मसीह में होकर अपने साथ संसार का मेल-मिलाप कर लिया, और उनके अपराधों का दोष उन पर नहीं लगाया... हम मसीह के राजदूत हैं... परमेश्वर के साथ मेल-मिलाप कर लो। *(2 कुरिन्थियों 5:18-20)*

जिन्होंने परमेश्वर से मेल-मिलाप नहीं किया है वे अब भी अपने पाप का बोझ उठा रहे हैं- उन्हें क्षमा नहीं किया गया है। और नि:सन्देह, स्वयं यीशु ने सिखाया कि उसके राजदूत को अस्वीकार करने का अर्थ है उसे अस्वीकार करना। जैसे प्रभु ने लूका अध्याय 10:16 में अपने सेवकों से कहा:

> “जो तुम्हारी सुनता है, वह मेरी सुनता है; और जो तुम्हें तुच्छ जानता है, वह मुझे तुच्छ जानता है।” *(लूका 10:16)*

यह विषय इतना महत्वपूर्ण था कि पौलुस ने अपनी पत्री के अधिकाँश भाग में इसका विविध रीतियों से वर्णन किया। जिन कुरिन्थयों से वह प्रेम करता था वह कभी नहीं चाहता था कि वे उसके सुसमाचार को अस्वीकार करने के कारण नष्ट हो जाएँ।

तीसरे भाग में यरूशलेम के लिए धन एकत्रित करने के बारे में निर्देश दिए गए हैं, जो अध्याय 7:2 से अध्याय 9:15 तक है। उस समय यहूदिया में अकाल के कारण यरूशलेम के मसीही अत्यधिक आवश्यकता में थे। इस संकट के जवाब में अन्य बहुत सी कलीसियाओं के साथ-साथ कुरिन्थियों की कलीसिया ने भी उनको सहायतारूपी दान भेजने का वायदा किया था। परन्तु कुरिन्थी अपने योगदान को एकत्रित करने के कार्य को पूरा करने में असफल हो गए थे। इसलिए, पौलुस दूसरों की खातिर त्याग के महत्व के बारे में विस्तार से चर्चा करता है। पहले वह मकिदुनिया की कलीसियाओं द्वारा दान देने के उदाहरण के बारे में बताता है, जिन्होंने अपनी क्षमता से कहीं अधिक दान दिया था और इस प्रकार सेवा करने का सम्मान पाकर प्रसन्न थे। उसने मसीह के उदाहरण के बारे में भी बताया, जिसने अपना जीवन दे दिया ताकि कुरिन्थी बहुतायत का आनन्द ले सकें। इससे बढ़कर, पौलुस ने कुरिन्थियों को प्रोत्साहित किया कि यदि वे अपने पहले के इरादों का पालन करते हैं तो परमेश्वर उन पर बड़ी आशीषों को उंडेलेगा।

अध्याय 10:1 से अध्याय 12:13 में पौलुस अपनी प्रेरिताई के बचाव की ओर लौटता है। ऐसा प्रतीत होता है कि कुरिन्थ के मसीही अपने अगुवों की उन विशेषताओं को अत्यधिक महत्व देते थे जिनका संसार में सम्मान किया जाता था, और चूंकि पौलुस ने इन विशेषताओं का प्रदर्शन नहीं किया था इसलिए कुरिन्थ में बहुत से विश्वासी उसकी शिक्षा और उसके अधिकार को महत्व नहीं देते थे। उदाहरण के लिए, कुरिन्थी प्रशिक्षित वक्ताओं को महत्व देते थे, और अपेक्षा रखते थे कि उनके अगुवे इसी प्रकार ध्यान आकर्षित करने वाले हों। और पौलुस पेशेवर भाषण कला का अभ्यास नहीं करता था, और कुरिन्थ में रहते समय कलीसिया पर बोझ न डालने के लिए उसने अपनी आर्थिक सहायता का प्रबन्ध स्वयं किया था, इसलिए उसे हीन माना गया।

इस व्यवहार के जवाब में पौलुस ने अपनी सेवकाई की वैधता पर बल देने और गलत मूल्यों को महत्व देने के कारण कुरिन्थियों को ताड़ना देने के लिए अपनी योग्यताओं के बारे में बताया। दूसरी बातों के साथ-साथ उसने सुसमाचार की खातिर किए गए आश्चर्यजनक बलिदानों और स्वर्ग को देखने के अपने अनुभव का वर्णन किया। इससे बढ़कर, वह उन झूठे प्रेरितों पर हमला करता है जो कुरिन्थ में अपने झूठ

को फैलाते हैं, लेकिन जिनके पास सांसारिक योग्यताएँ हैं जिनका कुरिन्थी सम्मान करते थे। इनके बारे में, पौलुस ने 2 कुरिन्थियों अध्याय 11:13 और 14 में लिखा:

> ऐसे लोग झूठे प्रेरित, और छल से काम करने वाले, और मसीह के प्रेरितों का रूप धरने वाले हैं। यह कुछ अचम्भे की बात नहीं क्योंकि शैतान आप भी ज्योतिर्मय स्वर्गदूत का रूप धारण करता है। इसलिए यदि उसके सेवक भी धर्म के सेवकों का सा रूप धरें, तो कोई बड़ी बात नहीं। *(2कुरिन्थियों 11:13-14)*

झूठे प्रेरितों को शैतान के सेवक कहने के द्वारा पौलुस ने स्पष्ट कर दिया कि वे अविश्वासी और झूठे थे, और उनकी सुनने वाले लोग अपनी जोखिम पर ऐसा करते थे।

अन्ततः, अध्याय 12:14 से अध्याय 13:10 में पौलुस अपनी आगामी यात्रा के विषय पर आता है। अब वह कुरिन्थ में आने की योजना बना रहा था चाहे इसका मतलब कलीसिया पर दण्ड हो या नहीं। दुःखद रूप से, उसे डर था कि उसे ऐसे बहुत से विश्वासी मिलेंगे जिन्हें उनके घोर पापों के बारे में चेतावनी दी गई थी परन्तु उन्होंने मन फिराना न चाहा था। पौलुस ने अपने पाठकों को निर्देश दिया कि वे अपने आप को जाँच कर सुनिश्चित कर लें कि वे विश्वास में हैं या नहीं। अध्याय 13:5 में उसके वचनों को देखें:

> अपने आप को परखो कि विश्वास में हो कि नहीं। अपने आप को जाँचो। क्या तुम अपने विषय में यह नहीं जानते कि यीशु मसीह तुम में है? नहीं तो तुम जाँच में निकम्मे निकले हो। *(2कुरिन्थियों 13:5)*

पौलुस जानता था कि विश्वास का अंगीकार करने वाले बहुत से लोग वास्तव में उद्धार के लिए मसीह पर भरोसा नहीं करते थे। इसलिए उसने गम्भीरता से इस आशा के साथ कुरिन्थियों को मन फिराव, विश्वास और उद्धार के सुसमाचार का प्रचार किया कि उसके विरोधी यीशु मसीह के सच्चे अनुयायी बन जाएँ।

कुरिन्थियों को लिखी कैनन में शामिल पौलुस की पत्रियों की पृष्ठभूमि और विषय सूची को संक्षेप में देखने के पश्चात् हमें अपना ध्यान तीसरे विषय पर लाना चाहिए: 1 और 2 कुरिन्थियों में प्रतिबिम्बित पौलुस का धर्मविज्ञानी दृष्टिकोण।

धर्मविज्ञानी दृष्टिकोण

अब तक इस अध्याय में हमने कई विशिष्ट समस्याओं का अवलोकन किया है जिनकी चर्चा पौलुस ने 1 और 2 कुरिन्थियों में की थी। और हमारा सुझाव है कि युगान्तविद्या के बारे में कुरिन्थियों की कमजोर समझ ने इन सारी समस्याओं को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया था। अत: जैसे हमने पौलुस के धर्मविज्ञान के केन्द्र के हमारे पिछले अध्यायों में किया है, अब हम अपना ध्यान पौलुस द्वारा अपने पाठकों को सुधारने के लिए अन्त के दिनों के अपने सिद्धान्त या युगान्तविद्या के प्रयोग की रीतियों पर लगाएँगे।

जैसा हमने इन अध्यायों में देखा है, पौलुस की युगान्तविद्या इतिहास के लिए परमेश्वर के स्वरूप के बारे में सामान्य यहूदी दृष्टिकोणों पर आधारित थी। पहली सदी के दौरान प्रमुख यहूदी विचारधारा थी कि पुराना नियम इतिहास को दो युगों में बाँटता है: “यह युग” और “आने वाला युग।” “यह युग” पाप, न्याय और मृत्यु का वर्तमान युग था, जबकि “आने वाला युग” परमेश्वर के लोगों के लिए अन्तिम आशीषों और परमेश्वर के शत्रुओं के विरूद्ध अन्तिम न्याय का भावी युग था। इन युगों के बीच बदलाव को चिन्हित

करने वाली घटना थी "मसीह" या "ख्रिस्त" का आगमन। जब मसीह आया, तो यह माना गया कि वह इस युग को समाप्त करेगा और आने वाले युग का आरम्भ करेगा।

नि:सन्देह मसीह के अनुयायियों जैसे पौलुस और दूसरे प्रेरितों ने पहचान लिया था कि इतिहास बिल्कुल वैसा नहीं था जैसी यहूदी धर्मविज्ञान ने अपेक्षा की थी। इसमें कोई सन्देह नहीं कि यीशु मसीह था, और उसने आने वाले युग का आरम्भ किया था। परन्तु उसने प्रतिज्ञा की हुई सारी आशीषों को पूरी तरह से पूर्ण नहीं किया था। संक्षेप में कहें तो हम एक ऐसे समय में रहते हैं जब अनन्त उद्धार का आने वाला युग एक अर्थ में "पहले से ही" है, लेकिन दूसरे अर्थों में "अभी तक नहीं" भी है। हमारा समय ऐसा है जब वर्तमान युग और आने वाले युग का अस्तित्व समकालिक है। युगों की इस समकालिकता के दौरान यद्यपि हम आने वाले युग की बहुत सी आशीषों का आनन्द ले रहे हैं, परन्तु हमें कलह और कठिनाई को भी पहचानना है जो पाप और मृत्यु के युग में बने रहते हैं।

पौलुस जानता था युगान्तविद्या के इस प्रारूप ने आरम्भिक कलीसिया के लिए समस्याएँ उत्पन्न कर दी थीं क्योंकि इसने उन्हें अनुमान लगाने के लिए बाध्य किया था कि आने वाले युग का कितना भाग पहले से ही विद्यमान था। पिछले अध्यायों में हमने देखा था कि कुछ विश्वासियों ने इन विषयों में उग्र रूप को अपना लिया था। उदाहरण के लिए, थिस्सलुनीकियों ने ऐसे दृष्टिकोण को विकसित कर लिया था जिसे हमनें "अतिउग्र युगान्तविद्या" का नाम दिया था, उनका विश्वास था कि निकट भविष्य में यीशु वर्तमान युग को समाप्त करके आने वाले युग को उसकी पूर्णता में स्थापित करेगा। इसके परिणामस्वरूप, वे इस युग के जीवन को महत्वहीन मानने लगे थे। गलातिया के विश्वासी, बदले में, ऐसा व्यवहार करते थे मानो आने वाला युग अभी महत्वपूर्ण रीति से आया ही नहीं आया था। हमने इस भ्रांति को "कम अनुभव की गई युगान्तविद्या" अथवा "निम्नस्तरीय युगान्तविद्या" का नाम दिया था।

जब हम कुरिन्थ की समस्याओं और उनके प्रति पौलुस के जवाब को निकटता से देखते हैं, तो हम पायेंगे कि कुरिन्थियों ने भी युगों की योजना का बहुत गलत मूल्यांकन किया था। उनके मनों में पाप और मृत्यु का वर्तमान युग लगभग समाप्त हो चुका था, और वे आने वाले युग की सारी खूबियों का आनन्द लेने के लिए स्वतंत्र थे। उनकी भ्रांति "अतिवादी युगान्तविद्या" की थी। अत: जब पौलुस ने उनकी कलीसिया के विशेष मुद्दों पर बात की तो उसने उन्हें सिखाया कि "पहले से" और "अभी नहीं" की इस समानान्तरता के दौरान अपने जीवन का मूल्यांकन किस प्रकार किया जाए और किस प्रकार उचित जीवन व्यतीत किया जाए।

यद्यपि पौलुस ने बहुत सी रीतियों में कुरिन्थियों की समस्याओं को संबोधित किया था लेकिन हम उसकी युगान्तविद्या के तीन बिन्दुओं पर ध्यान देंगे जो नियमित रूप से इन पत्रियों में उभरते हैं: विश्वास, विशेषत: मसीह की श्रेष्ठता के संबंध में; वर्तमान संसार की अपेक्षा भविष्य में आशा; और मसीही जीवन के निर्णायक घटक के रूप में प्रेम। आइए पहले हम देखते हैं कि कुरिन्थियों के विश्वास के असन्तुलनों को दूर करने के लिए पौलुस ने किस प्रकार मसीह की श्रेष्ठता पर बल दिया।

विश्वास

इस अध्याय में हमने देखा कि कुरिन्थियों के घमण्ड और अहंकार के कारण कलीसिया में बहुत सी समस्याएँ उत्पन्न हो गई थीं। मुख्यत: यह अहंकार इसलिए विकसित हुआ क्योंकि कुरिन्थियों की नजर सबके ऊपर प्रभु और सबके उद्धारकर्ता के रूप में मसीह की महिमा से हट गई थी। मसीह के प्रभुत्व के संबंध में उन्होंने उसके राज्य की स्थापना और उसके शासन को महत्व नहीं दिया था।

मसीह, प्रभु के रूप में

यह अजीब लग सकता है, लेकिन कुरिन्थ के कुछ मसीही इस तरह से व्यवहार कर रहे थे मानो मसीह परमेश्वर के राज्य को उसकी लगभग सारी पूर्णता में ले आया था, इसलिए वे अधिकाँश नहीं तो भी उन बहुत सी अनन्त आशीषों का पहले से ही आनन्द उठा रहे थे जो विश्वासियों के लिए परमेश्वर के मन में थीं। वे इस तरह भी व्यवहार कर रहे थे जैसे कि यीशु ने उन्हें अपने पृथ्वी पर स्थापित नये राज्य के लिए शासकों के रूप में नियुक्त किया था। यह विशेषत: उन कुरिन्थियों का मत प्रतीत होता है जो कलीसिया में अधिकार चलाते थे। उन्होंने सोचा कि मसीह ने उन्हें यह सामर्थ इसलिए दी थी क्योंकि वे दूसरों से अधिक बुद्धिमान और आत्मिक थे। और वे दूसरों को तिरस्कारपूर्ण नजरों से देखते थे, जिन्होंने उनकी नज़रों में, ऐसे महान प्रतिफलों को अर्जित नहीं किया था। देखें पौलुस इस प्रकार की विचारधाराके लिए 1कुरिन्थियों अध्याय 4:7 से 10 में किस प्रकार उन्हें झिड़कता है:

> तुझ में और दूसरे में कौन भेद करता है? और तेरे पास क्या है जो तू ने नहीं पाया? और जब कि तू ने पाया है, तो ऐसा घमण्ड क्यों करता है कि मानो नहीं पाया? तुम तो तृप्त हो चुके, तुम धनी हो चुके, तुम ने हमारे बिना राज्य किया... हम मसीह के लिए मूर्ख हैं, परन्तु तुम मसीह में बुद्धिमान हो; हम निर्बल हैं, परन्तु तुम बलवान हो। तुम आदर पाते हो, परन्तु हम निरादर होते हैं। *(1कुरिन्थियों 4:7-10)*

इस गद्यांश में पौलुस ने इन कुरिन्थियों की अहंकारपूर्ण सोच का मजाक उड़ाया। उन्होंने सोचा कि पद और आदर उन्होंने स्वयं अर्जित किया था, परन्तु वास्तव में मसीह ने उन्हें यह सब दिया था। वे जानते थे कि मसीह के वफादार अनुयायी पुन: स्थापित पृथ्वी पर एक दिन उसके साथ राज्य करेंगे, परन्तु उन्होंने मूर्खतापूर्वक यह सोच लिया कि उनका राज्य आरम्भ हो चुका था यद्यपि मसीह अभी राजा के रूप में लौटा नहीं था। और उन्होंने अपने लिए बुद्धि और ताकत और महिमा का दावा किया जो केवल मसीह की थी।

कई प्रकार से, उनकी गलतियाँ समझने योग्य हैं। कुरिन्थियों का अनुमान सही था कि मसीह द्वारा पृथ्वी की पुन: स्थापना के पश्चात् विश्वासी नई पृथ्वी पर राज्य करेंगे। और उन्होंने सही समझा था कि विश्वासी इस जीवन में अपने कार्यों के आधार पर अनन्त प्रतिफलों को प्राप्त करते हैं। चूंकि उनका विश्वास था कि राज्य की अन्तिम अवस्था मूलत: निकट थी, इसलिए उनके लिए यह सोचना स्वाभाविक ही था कि उन्हें महिमा दी जा चुकी है और उन्होंने अपने प्रतिफलों को प्राप्त कर लिया है। इससे बढ़कर, चूंकि इस पुन: स्थापित राज्य में मसीह कहीं भी दिखाई नहीं दे रहा था, इसलिए शासक के रूप मे उसकी सतत् भूमिका को महत्व न देना उनके लिए आसान रहा होगा।

परन्तु उनकी गलतियाँ चाहे समझने योग्य हों या नहीं, वे स्वीकार्य नहीं थीं। वास्तव में वे कलीसिया में बरबादी ला रही थीं, मुख्यत: उन विश्वासियों का अनादर करने और हानि पहुँचाने के द्वारा जो प्रभाव डालने की स्थिति में नहीं थे। अत: इस समस्या को सुधारने के लिए पौलुस ने इस तथ्य पर बल दिया कि आने वाला युग अभी अपनी पूर्णता में नहीं आया था। किसी ने भी “राज्य आरम्भ नहीं किया था।” हर कोई अब भी मसीह के लौटने की प्रतीक्षा में था।

मसीह, उद्धारकर्ता के रूप में

कुरिन्थी उद्धारकर्ता के रूप में मसीह की भूमिका को कम करके आँकने के द्वारा भी उसकी प्रशंसा करने में असफल हो गए थे। विशेषत:, उन्होंने इस तथ्य को नजरअन्दाज कर दिया था कि केवल मसीह में एक होने के द्वारा ही विश्वासी आत्मिक वरदानों और आदरसहित आने वाले युग की आशीषों जैसे आत्मिक वरदानों और आदर को प्राप्त करते हैं। मसीह में एक होने के द्वारा विश्वासी मसीह की पहचान

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

और गुण के भागी बनते हैं। और इसके कारण परमेश्वर उन्हें इस प्रकार देखता है जैसे वे स्वयं मसीह हों, इसलिए वह उन्हें स्थान, आदर और वरदान देता है जिनका वे कलीसिया में आनन्द उठाते हैं।

परन्तु बहुत से कुरिन्थियों के मन में यह था कि वरदान और आदर विश्वासियों द्वारा व्यक्तिगत रूप में अर्जित किए जाते थे। उनका सोचना था कि यदि कोई मसीही प्रभावशाली और प्रतिष्ठित था तो यह इस कारण था कि वह व्यक्ति इन बातों के योग्य था। और यदि किसी विश्वासी में इन सांसारिक श्रेष्ठताओं का अभाव था तो इसका कारण यह था कि वह एक हीन मसीही था या थी।

अत:, पौलुस अपनी युगान्तविद्या के उस दूसरे आयाम पर बल देने के द्वारा उनकी इस गलती का जवाब देता है जिसने मसीह के महत्व पर प्रकाश डाला, अर्थात् मसीह और विश्वासियों के बीच एकता का सिद्धान्त। देखें पौलुस 2 कुरिन्थियों अध्याय 5:15 से 17 में अपने विषय को कैसे बताता है:

> (मसीह) इस निमित्त सब के लिए मरा कि जो जीवित हैं, वे आगे को अपने लिए न जीएँ परन्तु उसके लिए जो उनके लिए मरा और फिर जी उठा। अत: अब से हम किसी को शरीर के अनुसार न समझेंगे...यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है: पुरानी बातें बीत गई हैं; देखो, सब बातें नई हो गई हैं। *(2 कुरिन्थियों 5:15-17)*

पौलुस ने बल दिया कि विश्वासी अपना या दूसरों का शारीरिक या सांसारिक प्रमापों के अनुसार मूल्यांकन न करें। बल्कि, वह चाहता था कि वे सारे विश्वासियों को ऐसे लोगों के रूप में देखें जो मसीह में एक हैं, और वे एक-दूसरे के प्रति सम्मान और प्रेम दिखाएँ जैसा वे स्वयं प्रभु के लिए करते थे। वास्तव में, पौलुस इस तर्क को कुरिन्थियों को लिखी अपनी पत्रियों में बार-बार लाता है। 1कुरिन्थियों अध्याय 8:11 और 12 में इस विषय पर उसकी सलाह को सुनें:

> इस रीति से तेरे ज्ञान के कारण वह निर्बल भाई जिसके लिए मसीह मरा, नष्ट हो जाएगा। इस प्रकार भाइयों के विरूद्ध अपराध करने से और उनके निर्बल विवेक को चोट पहुँचाने से, तुम मसीह के विरूद्ध अपराध करते हो। *(1कुरिन्थियों 8:11-12)*

पौलुस ने सिखाया था कि विश्वासी मसीह में एक हैं, इसलिए एक विश्वासी के विरूद्ध पाप करना मसीह के विरूद्ध पाप करना है। और इसी तर्क को वह उस समय भी देता है जब उसने धनवानों को निर्देश दिया कि वे प्रभुभोज के दौरान निर्धनों को लज्जित न करें। 1कुरिन्थियों अध्याय 11:24 से 27 में उसने लिखा:

> (यीशु ने) कहा, "यह मेरी देह है, जो तुम्हारे लिए है: मेरे स्मरण के लिए यही किया करो...यह कटोरा मेरे लहू में नई वाचा है...मेरे स्मरण के लिए यही किया करो"... इसलिए जो कोई अनुचित रीति से प्रभु की रोटी खाए या उसके कटोरे में से पीए, वह प्रभु की देह और लहू का अपराधी ठहरेगा। *(1 कुरिन्थियों 11:24-27)*

पौलुस ने कुरिन्थियों को स्मरण दिलाया कि यीशु ने स्वयं को उन सबके लिए दिया था, केवल धनी और ताकतवर लोगों के लिए ही नहीं। और उसने उन्हें याद दिलाया कि यह केवल मसीह, जो सब विश्वासियों में समान रूप से था, के द्वारा ही हुआ कि उन्हें आने वाले युग की आशीषें प्राप्त हुईं। अन्ततः, उसने यह बताया कि प्रभुभोज में अनुचित रीति से भाग लेना, अर्थात् प्रभुभोज के दौरान निर्धन या दूसरे विश्वासियों से दुर्व्यवहार करना स्वयं यीशु के विरूद्ध पाप करना है।

कुरिन्थियों को लिखी अपनी पत्रियों में, पौलुस ने निरन्तर संकेत दिया कि मसीह के साथ एकता दूसरे विश्वासियों का सम्मान करने, उन्हें महत्व देने और उनकी सेवा करने का आधार है। उसने 1कुरिन्थियों अध्याय 12:12 में ऐसा ही किया जब उसने लिखा कि विश्वासी मानवीय देह के अंगों के

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

समान ही एक-दूसरे पर निर्भर हैं। 2कुरिन्थियों अध्याय 1:5 में उसने पुन: वही किया जब उसने विश्वासियों को प्रोत्साहित किया कि वे मसीह के विश्राम में भागी होंगे। समय हमें अनुमति नहीं देता है कि हम उन सारे तरीक़ों का वर्णन करें जिनके द्वारा पौलुस कुरिन्थ की कलीसिया को लिखी अपनी पत्रियों में इन विचारों की व्याख्या करता है, इसलिए हमें उसके विचार को निम्नलिखित प्रकार से सारांश में बताने के द्वारा ही सन्तुष्ट होना होगा: विश्वासी केवल मसीह के साथ एकता के द्वारा ही आने वाले युग की आशीषों में सहभागी होते हैं। जब हम इसे पहचानते हैं, तो हम मसीह को उचित महिमा दे सकते हैं और अहंकार से जुड़े बहुत से पापों से बच सकते हैं।

आशा

पौलुस द्वारा कुरिन्थियों की युगान्तविद्या में सुधार करने के प्रयास का दूसरा तरीका उन्हें उनकी आशीषों की अस्थाई प्रकृति के बारे में याद दिलाना था। यद्यपि कुरिन्थी आने वाले युग की बहुत सी आशीषों का आनन्द उठा रहे थे, लेकिन पाप और मृत्यु का वर्तमान युग अभी समाप्त नहीं हुआ था। उदाहरण के लिए, 1कुरिन्थियों अध्याय 7:31 में पौलुस ने लिखा कि:

> इस संसार की रीति और व्यवहार बदलते जाते हैं। *(1कुरिन्थियों 7:31)*

ऐसा ही कथन उसने 1 कुरिन्थियों अध्याय 2:6 में भी कहा जब उसने लिखा:

> इस संसार के नाश होने वाले हाकिमों... *(1कुरिन्थियों 2:6)*

और 1 कुरिन्थियों अध्याय 15:50 में उसने कहा:

> मांस और लहू परमेश्वर के राज्य के अधिकारी नहीं हो सकते। *(1कुरिन्थियों 15:50)*

नि:सन्देह, कुरिन्थी जानते थे कि वे मांस और लहू के थे, इसलिए यह उनके बारे में था कि वे अपने अस्तित्व की वर्तमान अवस्था में अपने पूर्ण अनन्त प्रतिफलों को प्राप्त नहीं कर सकते थे। इसी प्रकार, पौलुस ने 1कुरिन्थियों अध्याय 4:8 में तर्क दिया कि कुरिन्थियों ने अभी मसीह के साथ राज्य करना आरम्भ नहीं किया था। वह आने वाले युग की पूर्णता में जीवन का दूसरा आयाम होगा।

संभवत: आशा के सिद्धान्त पर प्रत्यक्ष रूप से लागू होने वाला पौलुस द्वारा दिया गया सबसे लम्बा तर्क 1कुरिन्थियों अध्याय 15 में पाया जा सकता है। वहाँ, पौलुस ने उनका खण्डन किया जो भविष्य में सारे विश्वासियों के दैहिक पुनरूत्थान का इन्कार करते थे। जैसा हम देख चुके हैं, कुरिन्थ की कलीसिया के कुछ सदस्यों का विश्वास था कि वे आने वाले युग की सारी नहीं तौभी अधिकाँश आशीषों का पहले से आनन्द उठा रहे थे। उन्हें इतना अधिक आश्वासन था कि राज्य की सारी आशीषें पहले ही पहुँच चुकी हैं, उनका विश्वास था कि अब कुछ और शेष नहीं है जिसकी प्रतीक्षा की जाए। परन्तु 1कुरिन्थियों अध्याय 15 में पौलुस ने स्पष्ट किया कि आने वाले युग के अपनी पूर्णता तक पहुँचने से पहले किसी बड़ी घटना का होना और कुछ अतुल्य महत्वपूर्ण बदलावों का होना आवश्यक है। वह 1कुरिन्थियों अध्याय 15:22 से 24 में इन बदलावों को संक्षेप में बताता है:

> मसीह में सब जिलाए जाएँगे, परन्तु हर एक अपनी अपनी बारी से: पहला फल मसीह, फिर मसीह के आने पर उसके लोग। इसके बाद अन्त होगा। उस समय वह सारी प्रधानता, और सारा अधिकार, और सामर्थ का अन्त करके राज्य को परमेश्वर पिता के हाथ में सौंप देगा। *(1कुरिन्थियों 15:22-24)*

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

विश्वासियों का मृतकों में से जी उठना आवश्यक है, जैसे मसीह जी उठा, परन्तु उनका पुनरूत्थान मसीह के वापस लौटने तक नहीं होगा। फिर वे अपनी महिमा प्राप्त देहों में अनन्तकाल तक उसके साथ रहेंगे। मसीह का आगमन, और उनका पुनरूत्थान, इस वर्तमान युग की इसकी प्रधानता, और अधिकार, और सामर्थ के साथ समाप्ति का संकेत देगा।

चूंकि मसीह अभी तक लौटा नहीं है और पुनरूत्थान अभी तक नहीं हुआ है, इसलिए कुरिन्थी, चाहे वे जो भी सोचते हों, वे अभी महिमा में नहीं जी रहे थे। जैसा उसने 1कुरिन्थियों अध्याय 15:19 में लिखा:

> यदि हम केवल इसी जीवन में मसीह से आशा रखते हैं तो हम सब मनुष्यों से अधिक अभागे हैं। ***(1कुरिन्थियों 15:19)***

वर्तमान संसार की अस्थाई प्रकृति के बारे में साफ रूप से बताने के द्वारा, पौलुस ने कुरिन्थियों को उनके जीवन और उनकी कलीसिया पर एक यथार्थपरक दृष्टिकोण प्रदान करने की आशा की। और उसे आशा थी कि इस नये दृष्टिकोण के कारण वे अपने अहंकार और पाप से मन फिराएँगे।

प्रेम

पौलुस का अन्तिम धर्मविज्ञानी दृष्टिकोण जिसका हम वर्णन करेंगे वह है प्रेम का महत्व। सामान्यत:, हम प्रेम को परमेश्वर की सम्पूर्ण व्यवस्था का सार, या सबसे बड़ी आज्ञा के रूप में मानते हैं, परन्तु युगान्तविद्या के घटक के रूप में नहीं। यह सत्य है कि प्रेम वर्तमान युग में उतना ही महत्वपूर्ण है जितना कि आने वाले युग में, लेकिन यह भी सत्य है कि पौलुस के लिए प्रेम का अर्थ वह है जिसे हम युगान्तीय गुण कह सकते हैं। इसका अर्थ है- यह उसके अन्त के दिनों के धर्मविज्ञान का मुख्य घटक था।

उदाहरण के लिए, प्रेम के स्थिर मूल्य के बारे में पौलुस के तर्क को देखें, जो उसके प्रसिद्ध “प्रेम अध्याय,” 1कुरिन्थियों अध्याय 13 में है। उस अध्याय में पद 8 से 10 में उसने लिखा:

> प्रेम कभी टलता नहीं; भविष्यद्वाणियाँ हों, तो समाप्त हो जाएँगी; भाषाएँ हों, तो जाती रहेंगी; ज्ञान हो, तो मिट जाएगा। क्योंकि हमारा ज्ञान अधूरा है, और हमारी भविष्यद्वाणी अधूरी; परन्तु जब सर्वसिद्ध आएगा, तो अधूरा मिट जाएगा... पर अब विश्वास, आशा, प्रेम ये तीनों स्थाई हैं, पर इन में सब से बड़ा प्रेम है। ***(1कुरिन्थियों 13:8-10)***

उसका कहना था कि वर्तमान युग के बहुत से पहलू आने वाले युग के अपनी पूर्णता में पहुँचने पर नहीं रहेंगे। न भविष्यवाणी और न ज्ञान के वचन किसी काम के होंगे क्योंकि जिन बातों के बारे में वे बताते हैं वे ठीक हमारी आँखों के सामने होंगी। इसी प्रकार, विश्वास और आशा जैसे उच्च मसीही गुणों का भी आने वाले युग की पूर्णता में कोई वास्तविक स्थान नहीं होगा। इस अध्याय में पौलुस जितने आत्मिक वरदानों और मसीही गुणों का वर्णन करता है उन में से केवल प्रेम ही आने वाले युग में प्रकट होगा और चाहा जाएगा। अब हम प्रेम करते हैं और उस समय भी हम प्रेम करेंगे। अब हम से प्रेम किया जाता है और उस समय भी प्रेम किया जाएगा। प्रेम स्वयं आने वाले युग की आशीषों में भागीदारी है। वास्तव में यह उन आशीषों की मुख्य अभिव्यक्ति है।

परन्तु पौलुस ने युगान्तीय गुण के रूप में प्रेम को कुरिन्थ की समस्या पर कैसे लागू किया? हम पहले ही कुछ उदाहरण देख चुके हैं कि उसने यह कैसे किया। उदाहरण के लिए, उसने अधिक बुद्धिमान विश्वासियों को प्रेरित किया कि वे निर्बल मसीहियों की खातिर मूरतों के मन्दिर में भोजन खाने से बचें, नहीं

तो उनके इस व्यवहार से निर्बल मसीहियों को मूर्तिपूजा में शामिल होने का हियाव हो जाएगा। उसने इन शब्दों के द्वारा 1कुरिन्थियों अध्याय 8:1 में इस विषय का परिचय दिया:

> अब मूर्तियों के सामने बलि की हुई वस्तुओं के विषय में - हम जानते हैं कि हम सब को ज्ञान है। ज्ञान घमण्ड उत्पन्न करता है, परन्तु प्रेम से उन्नति होती है। *(1कुरिन्थियों 8:1)*

दूसरे शब्दों में, मूर्तियों को बलि की हुई वस्तुओं को न खाने के बारे में उसका तर्क वास्तव में इसके बारे में तर्क था कि कैसे प्रेम किया जाए।

अपनी प्रेरिताई का बचाव करते समय भी पौलुस ने दृढ़ता से प्रेम के बारे में बताया। उदाहरण के लिए, यह समझाते हुए कि उसने इस प्रकार सेवकाई क्यों की, उसने 2 कुरिन्थियों अध्याय 5:14 और 15 में लिखा:

> मसीह का प्रेम हमें विवश कर देता है; इसलिए कि हम यह समझते हैं कि जब एक सब के लिए मरा तो सब मर गए। और वह इस निमित्त सब के लिए मरा कि जो जीवित हैं, वे आगे को अपने लिए न जीएँ परन्तु उसके लिए जो उनके लिए मरा और फिर जी उठा। *(2कुरिन्थियों 5:14-15)*

पौलुस ने आत्मिक वरदानों के संबंध में अपने निर्देशों में प्रेम के बारे में अपने इन विचारों को कुरिन्थ की समस्या पर सर्वाधिक स्पष्ट रूप से लागू किया। यद्यपि पवित्र आत्मा ने कुरिन्थियों को अद्भुत वरदान दिए थे, लेकिन जिन लोगों के पास अन्य भाषा और भविष्यद्वाणी जैसे अधिक विशेष वरदान थे, वे अपने घमण्ड में उन लोगों को महत्वहीन समझने लगे थे जिनके पास कम अलौकिक वरदान थे, और पौलुस इस परिस्थिति का समाधान इस बात का संकेत देने के द्वारा निकालने की आशा करता है कि ये सारे वरदान, चाहे विशिष्ट हों या नहीं, ये सब व्यर्थ और निष्फल हैं यदि इनका प्रयोग प्रेम में न किया जाए। जैसे उसने 1कुरिन्थियों अध्याय 13:1 से 2 में लिखा:

> यदि मैं मनुष्यों और स्वर्गदूतों की बोलियाँ बोलूँ और प्रेम न रखूँ, तो मैं ठनठनाता हुआ पीतल, और झनझनाती हुई झाँझ हूँ। और यदि मैं भविष्यद्वाणी कर सकूँ, और सब भेदों और सब प्रकार के ज्ञान को समझूँ, और मुझे यहाँ तक पूरा विश्वास हो कि मैं पहाड़ों को हटा दूँ, परन्तु प्रेम न रखूँ, तो मैं कुछ भी नहीं। *(1 कुरिन्थियों 13:1-2)*

भविष्यवाणी, अन्य भाषाएँ, अलौकिक ज्ञान और आश्चर्यकर्मों को करने का विश्वास, सांसारिक दृष्टिकोण से मूल्यांकन करने पर ये सभी प्रभावशाली दिखाई पड़ते हैं। परन्तु यथार्थ में वे विश्वासियों के आत्मिक उत्थान के लिए दिए जाते हैं, सांसारिक महत्व या आनन्द के अनुभव के लिए नहीं। जब तक प्रेम में प्रयोग न किया जाए, आत्मिक वरदानों से कोई आत्मिक आशीष नहीं मिलती है। केवल प्रेम में प्रयोग किए जाने पर ही ये वरदान कलीसिया को आने वाले युग की आशीषों में भागीदार बनने की अनुमति देने के द्वारा वर्तमान युग के कष्ट और मृत्यु का शमन करते हैं।

उपसंहार

इस अध्याय में हमने देखा है कि कैसे पौलुस ने कुरिन्थ की कलीसिया में उत्पन्न हुई समस्याओं का जवाब दिया। हमने इस कलीसिया के साथ उसके संबंध की पृष्ठभूमि का पुनरावलोकन भी किया है, साथ ही उन्हें लिखित कैनन में शामिल उसकी पत्रियों की विषय सूची को भी देखा है। अन्त में हमने देखा है कि कैसे पौलुस ने अपने धर्मविज्ञान के केन्द्र को उनकी समस्याओं पर लागू किया, अर्थात् विश्वासियों से उनकी अतिवादी युगान्तविद्या का पुनर्मूल्यांकन करने के बारे में कहकर उन से कहा कि वे अपने पाप से मन फिराएँ, नम्रता को सीखें, एक-दूसरे का आदर करें, और परमेश्वर के राज्य की भावी अवस्था के लिए आशा रखें और प्रयत्न करें।

जब हम विचार करते हैं कि पौलुस ने कैसे कुरिन्थियों की कलीसिया को संभाला, तो हमें पता चलता है कि उसकी युगान्तविद्या उनकी समस्याओं के हल के लिए उसका एक अनिवार्य घटक थी, और यह भी कि यह आज हमें भी निर्देश दे सकती है। बहुत से मसीही आज भी अपने आपको बहुत ऊँचा समझते हैं, अपने वरदानों को घमण्ड के साथ देखते हैं, और उनका जीवन अब भी उनकी अपनी आवश्यकताओं और लालसाओं पर केन्द्रित है। कलीसियाएँ आज भी निरन्तर विभाजनों और गुटबाजी और लैंगिक पाप से संघर्ष कर रही हैं। और कुछ लोग पौलुस जैसे परमेश्वर के भविष्यवक्ताओं और प्रेरितों के प्रकाशनों का भी अनादर या उनकी निन्दा करते हैं। परन्तु मसीह ने पौलुस को अपने राजदूत के रूप में इसलिए नहीं बुलाया था कि हम उसकी अवहेलना करें, और मसीह का हमारे लिए जीना और मरना केवल इसलिए नहीं था कि हम इस वर्तमान पाप में गिरे हुए संसार में ही सन्तुष्ट रहें। जब हम पौलुस के धर्मविज्ञान के केन्द्र को सुनते हैं तो यह हमें उत्साहित करता है, जैसे इसने कुरिन्थियों को उत्साहित किया, कि हम एक-दूसरे से प्रेम करें, और मसीह के आगमन पर युगों की पूर्णता की प्रतीक्षा के दौरान हम मसीह पर केन्द्रित रहें।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।